दिनांक 24/02/24 अध्ययन सामग्री, स्नातक परीक्षा
(गुरुवार) विषय: हिन्दी III
विषय: दृष्टान्त अलंकार

डॉ० बजरंग प्रताप केसरी,
प्रो० - हिन्दी विभाग
एच० डी० जैन कालेज, आरा

दृष्टांत अलंकार —

यदि उपमेय-उपमान में बिम्ब - प्रतिबिम्ब भाव हो, तो दृष्टान्त अलंकार होता है। दृष्टांत का अर्थ है, उदाहरण। इसमें पहले किसी बात को कहकर उसके समर्थन के लिए उसी के अनुरूप दूसरी बात कही जाती है। इसमें दूसरा वाक्य पहले वाक्य में व्यक्त किये गये विचार की सत्यता प्रमाणित करने के लिए उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत होता है। अतः प्रथम वाक्य की संगति दूसरे वाक्य से पूर्णतः बैठ जाती है।

जब हम दर्पण के सम्मुख होते हैं तब हम होते हैं बिम्ब, और दर्पण में जो हमारी छाया पड़ती है, वह है प्रतिबिम्ब। जैसे हममें और हमारी छाया में अभेद होते हुए भी भेद है - हम सत्य हैं और छाया मिथ्या, हम सचेतन हैं और छाया अचेतन। फिर भी दोनों में हमी-हमारा ही व्यक्तित्व मौजूद है।

इसी प्रकार दृष्टान्त में प्रथम वाक्य उपमेय वाक्य एवं द्वितीय वाक्य उपमान वाक्य होता है। दोनों स्वतंत्र होते हैं, पर दोनों वाक्यों में एक ही तथ्य की अभिव्यक्ति होती है।

यथा — सहज सरल रघुवर वचन, कुमति कुटिल करि जान।
चलइ जोंक जिमि वक्रगति, यद्यपि सलिल समान॥

उक्त छन्द का आशय है कि राम के सहज और सरल वचन में भी कैकेयी को कुटिलता नजर आती है जिस प्रकार समतल जल की धारा में जोंक टेढ़ी-मेढ़ी चाल से चलता है। यहाँ कैकेयी की सोच और जोंक की गति में वक्रता के कारण साम्य है। अतः दृष्टान्त अलंकार की छटा दिखायी पड़ती है।